

MP TET Varg 2 Secondary Teacher Hindi Language

Q1. 'नर्मदा' शब्द में संज्ञा का कौन सा भेद है?

- (a) जातिवाचक संज्ञा
- (b) व्यक्तिवाचक संज्ञा
- (c) समूहवाचक संज्ञा
- (d) भाववाचक संज्ञा

Q2. किस वाक्य में संबंधवाचक सर्वनाम है?

निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़िए और प्रश्नों के उत्तर देने के लिए उचित विकल्प का चयन कीजिए।

- (a) अयोध्या जाने के लिये किससे कहूँ?
- (b) शर्माजी का घर यह नहीं, वह है।
- (c) इस घड़ी को देखा यह कितनी उपयोगी है।
- (d) तेते पाँव पसारिये, जेती लाँबी सौर

Q3. निम्नलिखित शब्दों में से विशेषण शब्द है-

निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़िए और प्रश्नों के उत्तर देने के लिए उचित विकल्प का चयन कीजिए।

- (a) पाँचवाँ
- (b) प्रपंच
- (c) सरपंच
- (d) पहुँच

Q4. 'राम लक्ष्मण से पत्र लिखवाता है'

उपर्युक्त वाक्य में क्रिया का कौन सा रूप है?

- (a) पूर्णकालिक क्रिया
- (b) प्रेरणार्थक क्रिया
- (c) संयुक्त क्रिया
- (d) अपूर्ण क्रिया

Q5. "कामदेव" का पर्यायवाची है-

- (a) सरोज
- (b) उरोज
- (c) मनोज
- (d) पाथोज

Q6. निम्नलिखित में 'राग' का विलोम कौन - सा शब्द है?

- (a) आहत
- (b) उदार
- (c) गमन
- (d) विराग

Q7. 'भौरा', 'कोयल', 'सखी' किस शब्द के अनेकार्थी हैं:

- (a) अलि
- (b) अंत
- (c) अनंता
- (d) आकार

Q8. निम्नलिखित प्रश्न में, चार विकल्पों में से उस विकल्प का चयन करें जो दिये गए शब्द का सही तत्सम शब्द है।
खोपड़ी

- (a) खर्पर
- (b) व्याघ्र
- (c) लोक
- (d) लवंग

Q9. कच्चा चिट्ठा खोलना' का उपयुक्त अर्थ है

- (a) सारा भेद खोल देना
- (b) कच्चे काम को पक्का करना
- (c) भेद छिपाना
- (d) कान का कच्चा होना

Q10. निम्नलिखित प्रश्न में, चार विकल्पों में से उस विकल्प का चयन करें जो दिए गए लोकोक्ति का सही अर्थ हो।
कबहुँ निरामिष होय न कागा

- (a) ऊपरी वेशभूषा से किसी के अवगुण नहीं छिप जाते
- (b) कोई अपने माल को खराब नहीं कहता
- (c) दुष्ट अपनी दुष्टता नहीं छोड़ता
- (d) बहुत कठिन परिश्रम का थोड़ा लाभ

Q11. प्राण से बहना चाहिए ।

निम्नलिखित गद्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों में सही। सबसे उपयुक्त उत्तर वाले विकल्प का चुनिए।

दिन भर हमारा प्राण गहरे से बहना चाहिए । यदि पेट के नीचे कंद स्थान से प्राण का बहना सुनिश्चित कर लिया जाए तो यह हमारे स्वास्थ्य के लिए बहुत अच्छा होता है । लेकिन अधिकतर हमारा प्राण छाती से शुरू करके छोटी सी यात्रा करके रह जाता है । उसका गहरे से बहना नहीं हो पाता । यदि हम दिन में जब भी याद आए, तभी अपने प्राण को धीमा और गहरा भरना शुरू कर दें तो खुद को ऊर्जावान, प्राणवान, शक्तिवान और शांत स्वभाव का अनुभव करने लगेंगे । हमारे भीतर धैर्य और रचनात्मकता बढ़ने लगेगी । मन का तनाव समाप्त हो जाएगा । भय, घबराहट से मुक्ति मिल जाएगी । साथ ही यह अभ्यास ध्यान की गहराइयों में ले जाने में भी सहायक होगा ।

- (a) मंद-मंद रूप
- (b) गहराई
- (c) धीमी गति
- (d) तीव्र गति

Q12. ऊर्जावान, शक्तिवान और शांत स्वभाव का बनने के लिए आवश्यक है :

निम्नलिखित गद्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों में सही। सबसे उपयुक्त उत्तर वाले विकल्प का चुनिए।

दिन भर हमारा प्राण गहरे से बहना चाहिए। यदि पेट के नीचे कंद स्थान से प्राण का बहना सुनिश्चित कर लिया जाए तो यह हमारे स्वास्थ्य के लिए बहुत अच्छा होता है। लेकिन अधिकतर हमारा प्राण छाती से शुरू करके छोटी सी यात्रा करके रह जाता है। उसका गहरे से बहना नहीं हो पाता। यदि हम दिन में जब भी याद आए, तभी अपने प्राण को धीमा और गहरा भरना शुरू कर दें तो खुद को ऊर्जावान, प्राणवान, शक्तिवान और शांत स्वभाव का अनुभव करने लेंगे। हमारे भीतर धैर्य और रचनात्मकता बढ़ने लगेगी। मन का तनाव समाप्त हो जाएगा। भय, घबराहट से मुक्ति मिल जाएगी। साथ ही यह अभ्यास ध्यान की गहराइयों में ले जाने में भी सहायक होगा।

- (a) प्राण वायु का धीमा और गहराई से बहना।
- (b) प्राण वायु का तेज़ और गहराई से बहना।
- (c) प्राण वायु का गहराई और देर तक बहना।
- (d) प्राण वायु का धीमा और नीचे बहना।

Q13. यदि प्राण वायु व्यवस्थित रूप से बहता है तो क्या नहीं होगा ?

निम्नलिखित गद्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों में सही। सबसे उपयुक्त उत्तर वाले विकल्प का चुनिए।

दिन भर हमारा प्राण गहरे से बहना चाहिए। यदि पेट के नीचे कंद स्थान से प्राण का बहना सुनिश्चित कर लिया जाए तो यह हमारे स्वास्थ्य के लिए बहुत अच्छा होता है। लेकिन अधिकतर हमारा प्राण छाती से शुरू करके छोटी सी यात्रा करके रह जाता है। उसका गहरे से बहना नहीं हो पाता। यदि हम दिन में जब भी याद आए, तभी अपने प्राण को धीमा और गहरा भरना शुरू कर दें तो खुद को ऊर्जावान, प्राणवान, शक्तिवान और शांत स्वभाव का अनुभव करने लेंगे। हमारे भीतर धैर्य और रचनात्मकता बढ़ने लगेगी। मन का तनाव समाप्त हो जाएगा। भय, घबराहट से मुक्ति मिल जाएगी। साथ ही यह अभ्यास ध्यान की गहराइयों में ले जाने में भी सहायक होगा।

- (a) घबराहट में वृद्धि होना।
- (b) मन का तनाव दूर होना।
- (c) रचनात्मकता का विकास होना।
- (d) भय से मुक्ति मिलना।

Q14. प्राण वायु का गहराई और धीमी गति से बहना में सहायता करता है।

निम्नलिखित गद्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों में सही। सबसे उपयुक्त उत्तर वाले विकल्प का चुनिए।

दिन भर हमारा प्राण गहरे से बहना चाहिए। यदि पेट के नीचे कंद स्थान से प्राण का बहना सुनिश्चित कर लिया जाए तो यह हमारे स्वास्थ्य के लिए बहुत अच्छा होता है। लेकिन अधिकतर हमारा प्राण छाती से शुरू करके छोटी सी यात्रा करके रह जाता है। उसका गहरे से बहना नहीं हो पाता। यदि हम दिन में जब भी याद आए, तभी अपने प्राण को धीमा और गहरा भरना शुरू कर दें तो खुद को ऊर्जावान, प्राणवान, शक्तिवान और शांत स्वभाव का अनुभव करने लेंगे। हमारे भीतर धैर्य और रचनात्मकता बढ़ने लगेगी। मन का तनाव समाप्त हो जाएगा। भय, घबराहट से मुक्ति मिल जाएगी। साथ ही यह अभ्यास ध्यान की गहराइयों में ले जाने में भी सहायक होगा।

- (a) इच्छाएँ पूर्ण करने
- (b) व्यापार बढ़ाने
- (c) ध्यान लगाने
- (d) अभ्यासमुक्त होने

Q15. मानव-जीवन में सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण है :

निम्नलिखित गद्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों में सही। सबसे उपयुक्त उत्तर वाले विकल्प का चुनिए।

दिन भर हमारा प्राण गहरे से बहना चाहिए। यदि पेट के नीचे कंद स्थान से प्राण का बहना सुनिश्चित कर लिया जाए तो यह हमारे स्वास्थ्य के लिए बहुत अच्छा होता है। लेकिन अधिकतर हमारा प्राण छाती से शुरू करके छोटी सी यात्रा करके रह जाता है। उसका गहरे से बहना नहीं हो पाता। यदि हम दिन में जब भी याद आए, तभी अपने प्राण को धीमा और गहरा भरना शुरू कर दें तो खुद को ऊर्जावान, प्राणवान, शक्तिवान और शांत स्वभाव का अनुभव करने लेंगे। हमारे भीतर धैर्य और रचनात्मकता बढ़ने लगेगी। मन का तनाव समाप्त हो जाएगा। भय, घबराहट से मुक्ति मिल जाएगी। साथ ही यह अभ्यास ध्यान की गहराइयों में ले जाने में भी सहायक होगा।

- (a) ' प्राण वायु
- (b) अभ्यास
- (c) ध्यान
- (d) योग

Q16. विशेषण शब्द है :

निम्नलिखित गद्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों में सही। सबसे उपयुक्त उत्तर वाले विकल्प का चुनिए।

दिन भर हमारा प्राण गहरे से बहना चाहिए। यदि पेट के नीचे कंद स्थान से प्राण का बहना सुनिश्चित कर लिया जाए तो यह हमारे स्वास्थ्य के लिए बहुत अच्छा होता है। लेकिन अधिकतर हमारा प्राण छाती से शुरू करके छोटी सी यात्रा करके रह जाता है। उसका गहरे से बहना नहीं हो पाता। यदि हम दिन में जब भी याद आए, तभी अपने प्राण को धीमा और गहरा भरना शुरू कर दें तो खुद को ऊर्जावान, प्राणवान, शक्तिवान और शांत स्वभाव का अनुभव करने लेंगे। हमारे भीतर धैर्य और रचनात्मकता बढ़ने लगेगी। मन का तनाव समाप्त हो जाएगा। भय, घबराहट से मुक्ति मिल जाएगी। साथ ही यह अभ्यास ध्यान की गहराइयों में ले जाने में भी सहायक होगा।

- (a) शांत
- (b) घबराहट
- (c) मन
- (d) धैर्य

Q17. "सुनिश्चित में उपसर्ग और मूल शब्द है :

निम्नलिखित गद्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों में सही। सबसे उपयुक्त उत्तर वाले विकल्प का चुनिए।

दिन भर हमारा प्राण गहरे से बहना चाहिए। यदि पेट के नीचे कंद स्थान से प्राण का बहना सुनिश्चित कर लिया जाए तो यह हमारे स्वास्थ्य के लिए बहुत अच्छा होता है। लेकिन अधिकतर हमारा प्राण छाती से शुरू करके छोटी सी यात्रा करके रह जाता है। उसका गहरे से बहना नहीं हो पाता। यदि हम दिन में जब भी याद आए, तभी अपने प्राण को धीमा और गहरा भरना शुरू कर दें तो खुद को ऊर्जावान, प्राणवान, शक्तिवान और शांत स्वभाव का अनुभव करने लेंगे। हमारे भीतर धैर्य और रचनात्मकता बढ़ने लगेगी। मन का तनाव समाप्त हो जाएगा। भय, घबराहट से मुक्ति मिल जाएगी। साथ ही यह अभ्यास ध्यान की गहराइयों में ले जाने में भी सहायक होगा।

- (a) स + निश्चित
- (b) सुनि + श्चित
- (c) सु + निश्चित
- (d) सुनिश्चि + त

Q18. इस गद्यांश में लेखक ने महात्मा गांधी के विषय में क्या कहा है?

निम्नलिखित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़िए और प्रश्नों के उत्तर देने के लिए उचित विकल्प का चयन कीजिए।

कुछ महापुरुष तटस्थ होकर चिंतन करते हैं और अन्वीक्षण, चिंतन, मनन, विश्लेषण, संश्लेषण आदि के आधार पर नई व्यवस्था की कल्पना करते हैं तथा नए मूल्यों, नए आदर्शों तथा नई आस्थाओं का सृजन करते हैं। नई व्यवस्था देने वाले ऐसे तटस्थ चिंतक धन्य होते हैं क्योंकि केवल आलोचना करते रहना तो सरल है किन्तु उपाय बताना कठिन है। मार्क्स ने कुछ उपाय बताए और लेनिन ने उन्हें मूर्त रूप दिया। रूसो, लास्की आदि ने भी उपाय बताए, उन्हें साकार करना अन्य जन पर निर्भर रहा। किन्तु कुछ महापुरुष और भी आगे बढ़ गए। उन्होंने केवल उपाय नहीं बताया बल्कि स्वयं एकनिष्ठा से उस पर आचरण करने के लिए जुट गए। महात्मा गांधी ने जो समझा वही कहा, और जो कहा वही किया। उनके विचार, कथनी और करनी एक ही थे। उनमें अपनी बात कहने और आचरण करने का साहस था। उनका जीवन अपने सुझाए हुए उपायों एवं आदर्शों के आधार पर विहित प्रयोगों और अनुभवों की सजीव श्रृंखला है। महात्मा गांधी काल के प्रवाह के साथ नहीं बहे। वे युग प्रवर्तक हो गए। गांधी महान और आलौकिक पुरुष थे।

- (a) वे केवल सिद्धांतवादी थे।
- (b) उनकी कथनी और करनी में अंतर था।
- (c) वे केवल आदर्शवादी थे।
- (d) उपर्युक्त में से कोई नहीं।

Q19. 'तटस्थ चिंतन से क्या अभिप्राय है?

निम्नलिखित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़िए और प्रश्नों के उत्तर देने के लिए उचित विकल्प का चयन कीजिए।

कुछ महापुरुष तटस्थ होकर चिंतन करते हैं और अन्वीक्षण, चिंतन, मनन, विश्लेषण, संश्लेषण आदि के आधार पर नई व्यवस्था की कल्पना करते हैं तथा नए मूल्यों, नए आदर्शों तथा नई आस्थाओं का सृजन करते हैं। नई व्यवस्था देने वाले ऐसे तटस्थ चिंतक धन्य होते हैं क्योंकि केवल आलोचना करते रहना तो सरल है किन्तु उपाय बताना कठिन है। मार्क्स ने कुछ उपाय बताए और लेनिन ने उन्हें मूर्त रूप दिया। रूसो, लास्की आदि ने भी उपाय बताए, उन्हें साकार करना अन्य जन पर निर्भर रहा। किन्तु कुछ महापुरुष और भी आगे बढ़ गए। उन्होंने केवल उपाय नहीं बताया बल्कि स्वयं एकनिष्ठा से उस पर आचरण करने के लिए जुट गए। महात्मा गांधी ने जो समझा वही कहा, और जो कहा वही किया। उनके विचार, कथनी और करनी एक ही थे। उनमें अपनी बात कहने और आचरण करने का साहस था। उनका जीवन अपने सुझाए हुए उपायों एवं आदर्शों के आधार पर विहित प्रयोगों और अनुभवों की सजीव श्रृंखला है। महात्मा गांधी काल के प्रवाह के साथ नहीं बहे। वे युग प्रवर्तक हो गए। गांधी महान और आलौकिक पुरुष थे।

- (a) स्वांतः सुखाय ऊहापोह करना।
- (b) एकांत में बैठकर सोचना
- (c) निष्पक्ष होकर सोच-विचार करना।
- (d) गंभीर चिंतन करना।

Q20. उक्त गद्यांश का संबंध निम्नलिखित में से किससे है?

निम्नलिखित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़िए और प्रश्नों के उत्तर देने के लिए उचित विकल्प का चयन कीजिए।

कुछ महापुरुष तटस्थ होकर चिंतन करते हैं और अन्वीक्षण, चिंतन, मनन, विश्लेषण, संश्लेषण आदि के आधार पर नई व्यवस्था की कल्पना करते हैं तथा नए मूल्यों, नए आदर्शों तथा नई आस्थाओं का सृजन करते हैं। नई व्यवस्था देने वाले ऐसे तटस्थ चिंतक धन्य होते हैं क्योंकि केवल आलोचना करते रहना तो सरल है किन्तु उपाय बताना कठिन है। मार्क्स ने कुछ उपाय बताए और लेनिन ने उन्हें मूर्त रूप दिया। रूसो, लास्की आदि ने भी उपाय बताए, उन्हें साकार करना अन्य जन पर निर्भर रहा। किन्तु कुछ महापुरुष और भी आगे बढ़ गए। उन्होंने केवल उपाय नहीं बताया बल्कि स्वयं एकनिष्ठा से उस पर आचरण करने के लिए जुट

गए। महात्मा गांधी ने जो समझा वही कहा, और जो कहा वही किया। उनके विचार, कथनी और करनी एक ही थे। उनमें अपनी बात कहने और आचरण करने का साहस था। उनका जीवन अपने सुझाए हुए उपायों एवं आदर्शों के आधार पर विहित प्रयोगों और अनुभवों की सजीव श्रृंखला है। महात्मा गांधी काल के प्रवाह के साथ नहीं बहे। वे युग प्रवर्तक हो गए। गांधी महान और आलौकिक पुरुष थे।

- (a) आदर्शवाद
- (b) मार्क्सवाद
- (c) समाजवाद
- (d) कर्मवाद

Q21. इस गद्यांश में लेखक ने मुख्य रूप से क्या वर्णित किया है?

निम्नलिखित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़िए और प्रश्नों के उत्तर देने के लिए उचित विकल्प का चयन कीजिए।

कुछ महापुरुष तटस्थ होकर चिंतन करते हैं और अन्वीक्षण, चिंतन, मनन, विश्लेषण, संश्लेषण आदि के आधार पर नई व्यवस्था की कल्पना करते हैं तथा नए मूल्यों, नए आदर्शों तथा नई आस्थाओं का सृजन करते हैं। नई व्यवस्था देने वाले ऐसे तटस्थ चिंतक धन्य होते हैं क्योंकि केवल आलोचना करते रहना तो सरल है किन्तु उपाय बताना कठिन है। मार्क्स ने कुछ उपाय बताए और लेनिन ने उन्हें मूर्त रूप दिया। रूसो, लास्की आदि ने भी उपाय बताए, उन्हें साकार करना अन्य जन पर निर्भर रहा। किन्तु कुछ महापुरुष और भी आगे बढ़ गए। उन्होंने केवल उपाय नहीं बताया बल्कि स्वयं एकनिष्ठा से उस पर आचरण करने के लिए जुट गए। महात्मा गांधी ने जो समझा वही कहा, और जो कहा वही किया। उनके विचार, कथनी और करनी एक ही थे। उनमें अपनी बात कहने और आचरण करने का साहस था। उनका जीवन अपने सुझाए हुए उपायों एवं आदर्शों के आधार पर विहित प्रयोगों और अनुभवों की सजीव श्रृंखला है। महात्मा गांधी काल के प्रवाह के साथ नहीं बहे। वे युग प्रवर्तक हो गए। गांधी महान और आलौकिक पुरुष थे।

- (a) कुछ महापुरुषों का चरित्र चित्रण किया है।
- (b) मार्क्स के सिद्धांतों की व्याख्या की है।
- (c) मात्र महात्मा गांधी के चरित्र की विशिष्टता का कारण बताया है।
- (d) महात्मा गांधी के सत्याग्रह आंदोलन का महत्व मात्र समझाया है।

Q22. इस गद्यांश में लेखक ने यूरोप के कुछ महापुरुषों के विषय में क्या कहा है?

निम्नलिखित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़िए और प्रश्नों के उत्तर देने के लिए उचित विकल्प का चयन कीजिए।

कुछ महापुरुष तटस्थ होकर चिंतन करते हैं और अन्वीक्षण, चिंतन, मनन, विश्लेषण, संश्लेषण आदि के आधार पर नई व्यवस्था की कल्पना करते हैं तथा नए मूल्यों, नए आदर्शों तथा नई आस्थाओं का सृजन करते हैं। नई व्यवस्था देने वाले ऐसे तटस्थ चिंतक धन्य होते हैं क्योंकि केवल आलोचना करते रहना तो सरल है किन्तु उपाय बताना कठिन है। मार्क्स ने कुछ उपाय बताए और लेनिन ने उन्हें मूर्त रूप दिया। रूसो, लास्की आदि ने भी उपाय बताए, उन्हें साकार करना अन्य जन पर निर्भर रहा। किन्तु कुछ महापुरुष और भी आगे बढ़ गए। उन्होंने केवल उपाय नहीं बताया बल्कि स्वयं एकनिष्ठा से उस पर आचरण करने के लिए जुट गए। महात्मा गांधी ने जो समझा वही कहा, और जो कहा वही किया। उनके विचार, कथनी और करनी एक ही थे। उनमें अपनी बात कहने और आचरण करने का साहस था। उनका जीवन अपने सुझाए हुए उपायों एवं आदर्शों के आधार पर विहित प्रयोगों और अनुभवों की सजीव श्रृंखला है। महात्मा गांधी काल के प्रवाह के साथ नहीं बहे। वे युग प्रवर्तक हो गए। गांधी महान और आलौकिक पुरुष थे।

- (a) उन्होंने नए मूल्यों की स्थापना की।
- (b) उन्होंने कुछ नए आदर्श स्थापित किए।
- (c) उन्होंने उपाय तो बताए पर उनका कार्यान्वयन दूसरों पर छोड़ दिया।
- (d) वे यथार्थवादी थे।

Q23. निम्नलिखित प्रश्न में, चार विकल्पों में से उस विकल्प का चयन करें जो दिये गए संधि-विच्छेद शब्द का सही संधि का विकल्प हो।

अच् + अन्त =

- (a) अजन्त
- (b) अचंत
- (c) अंत
- (d) अचिन्त्य

Q24. "अभी-अभी" किस प्रकार का समास है?

- (a) द्वंद
- (b) तत्पुरुष
- (c) कर्मधारय
- (d) अव्ययीभाव

Q25. "थोड़ा नपा -तुला भोजन करने वाला" वाक्यांश के लिए उपयुक्त शब्द है -

- (a) मितव्ययी
- (b) मितव्यय
- (c) मिताहारी
- (d) मितहारीने

Q26. वर्तनी की दृष्टि से कौन-सा शब्द अशुद्ध है?

- (a) उपार्जित
- (b) निश्चेष्ट
- (c) उज्ज्वल
- (d) उपर्युक्त में से एक से अधिक
- E. उपर्युक्त में से कोई नहीं

Q27. राजस्थानी भाषा का उद्भव अपभ्रंश के किस क्षेत्रीय रूप से हुआ है?

- (a) अर्धमागधी अपभ्रंश
- (b) शौरसेनी अपभ्रंश
- (c) ब्राह्मण अपभ्रंश
- (d) उपर्युक्त में से एक से अधिक

Q28. प्रेमधन की छाया-स्मृति के लेखक हैं -

- (a) केदारनाथ सिंह
- (b) रघुवीर सहाय
- (c) रामचन्द्र शुक्ल
- (d) उपर्युक्त में से एक से अधिक

Q29. निम्नलिखित में से कौन सी रचना हजारी प्रसाद द्विवेदी जी द्वारा नहीं लिखी गई है?

- (a) वाणभट्ट की आरम्भ-कथा
- (b) पुनर्नवा
- (c) कादम्बरी
- (d) कल्पलता

Q30. नीचे दिए गए वाक्यों में प्रयुक्त अलंकार के भेद का चयन, उसके नीचे दिए विकल्पों में से कीजिए:

'रहिमन जो गति दीप की, कुल कपूत गति सोया। बारे उजियारे लगै, बढै अंधेरो होया।'

निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़िए और प्रश्नों के उत्तर देने के लिए उचित विकल्प का चयन कीजिए।

- (a) उपमा
- (b) रूपक
- (c) यमक
- (d) श्लेष

Solutions

S1. Ans.(b)

Sol. नर्मदा' शब्द व्यक्तिवाचक संज्ञा है। व्यक्तिवाचक संज्ञा का अर्थ है किसी विशिष्ट व्यक्ति, स्थान, नदी, वस्तु आदि के नाम को व्यक्त करने वाली संज्ञा। 'नर्मदा' भारत की एक प्रमुख नदी का नाम है और इसका प्रयोग एक विशेष नदी को इंगित करने के लिए होता है, इसलिए यह व्यक्तिवाचक संज्ञा है।

Information Booster:

- व्यक्तिवाचक संज्ञा किसी विशेष व्यक्ति, स्थान या वस्तु का नाम होती है, जैसे 'दिल्ली,' 'राम,' 'नर्मदा' आदि।
- नर्मदा भारत की प्रमुख नदियों में से एक है, जो मध्य प्रदेश, महाराष्ट्र और गुजरात से होकर बहती है।
- व्यक्तिवाचक संज्ञा के उदाहरणों में स्थान, व्यक्ति, नदी और पर्वतों के नाम आते हैं।
- जातिवाचक संज्ञासे भिन्न, व्यक्तिवाचक संज्ञा किसी विशिष्ट इकाई को संदर्भित करती है।
- यह संज्ञा विशेष रूप से उस एकमात्र वस्तु या व्यक्ति को इंगित करती है जिसका नाम लिया जाता है।

Additional Knowledge:

- **जातिवाचक संज्ञा:** यह संज्ञा किसी वस्तु, व्यक्ति या स्थान की पूरी जाति या वर्ग को दर्शाती है। उदाहरण के लिए, 'पक्षी' या 'मनुष्य' जातिवाचक संज्ञा हैं।
- **व्यक्तिवाचक संज्ञा:** यह किसी विशेष व्यक्ति, स्थान, वस्तु या जीव के नाम को दर्शाती है। उदाहरण 'नर्मदा,' 'दिल्ली,' और 'राम' हैं।
- **समूहवाचक संज्ञा:** यह किसी समूह या समुदाय को दर्शाती है, जैसे 'भीड़,' 'झुंड,' आदि।
- **भाववाचक संज्ञा:** यह किसी भावना, गुण, या अवस्था को व्यक्त करती है, जैसे 'सच्चाई,' 'प्रेम,' 'दया'।

S2. Ans.(d)

Sol. सही उत्तर : तेते पाँव पसारिये, जेती लाँबी सौर

व्याख्या : तेते पाँव पसारिए, जेती लांबी सौर' इस वाक्य में संबंधवाचक सर्वनाम का प्रयोग हुआ है। संबंध वाचक सर्वनाम की पहचान ' जिसका-उसका', 'जैसा-वैसा' 'जितना-उतना' इत्यादि वाचक शब्दों की सहायता से की जा सकती है।

S3. Ans.(a)

Sol. "पाँचवाँ" शब्द विशेषण है। विशेषण वह शब्द होता है जो संज्ञा या सर्वनाम की विशेषता बताता है। "पाँचवाँ" शब्द क्रम या संख्या बताने के लिए उपयोग किया जाता है, जैसे पाँचवाँ स्थान, पाँचवाँ व्यक्ति आदि। यह किसी संज्ञा की विशेषता बताता है कि वह संज्ञा किस क्रम या संख्या में स्थित है, इसलिए यह विशेषण है।

Information Booster:

- विशेषण वह शब्द है जो संज्ञा या सर्वनाम की विशेषता बताता है।
- विशेषण संख्या, गुण, आकार, रंग, और स्थिति आदि का बोध कराते हैं।
- "पाँचवाँ" संख्या-विशेषण का उदाहरण है, जो किसी वस्तु या व्यक्ति की स्थिति को क्रम में दर्शाता है।
- विशेषण शब्द का प्रयोग भाषा में संज्ञा या सर्वनाम को और स्पष्ट बनाने के लिए होता है।
- अन्य उदाहरण: 'सुंदर', 'बड़ा', 'तीसरा' आदि।

Additional Knowledge:

- **पाँचवाँ:** यह संख्या विशेषण है, जो क्रमिक संख्या बताता है। यह विशेषण के रूप में प्रयोग होता है।
- **प्रपंच:** इसका अर्थ है छल या धोखा। यह संज्ञा है और विशेषण नहीं।
- **सरपंच:** इसका अर्थ है गाँव की पंचायत का मुखिया। यह भी संज्ञा है।
- **पहुँच:** इसका अर्थ है किसी स्थान या स्थिति तक पहुँचना। यह क्रिया है और विशेषण नहीं।

S4. Ans.(b)

Sol. 'राम लक्ष्मण से पात्र लिखवाता है' इस वाक्य में प्रेरणार्थक क्रिया है। मूल धातु का वह विकृत रूप जिससे क्रिया के व्यापार में कर्ता (प्रेरित कर्ता) पर किसी (प्रेरक कर्ता) की प्रेरणा का बोध हो तो उसे प्रेरणार्थक क्रिया कहते हैं। प्रेरणार्थक क्रिया की रचना सकर्मक एवं अकर्मक दोनों प्रकार की क्रियाओं से हो सकती है, लेकिन प्रेरणार्थक क्रिया बन जाने के पश्चात वह सदैव सकर्मक ही होगी। प्रेरणार्थक क्रिया में दो कर्ता होते हैं जो निम्नलिखित हैं।

प्रेरक कर्ता – वह कर्ता जो क्रिया करने के लिए प्रेरणा देता है।

प्रेरित कर्ता – वह कर्ता जो क्रिया करने के लिए प्रेरणा देता है।

प्रेरणार्थक क्रिया के उदाहरण

वह सबसे चालान भरवाता है।

महेश बच्चों को रुलाता है।

गीता बच्चों को हिंदी पढ़ाती है।

S5. Ans.(c)

Sol. "कामदेव" का पर्यायवाची शब्द "मनोज" है। भारतीय पौराणिक कथाओं में, कामदेव को प्रेम और आकर्षण का देवता माना जाता है, और "मनोज" का अर्थ है "मन से उत्पन्न" या "वह जो मन को मोहित करता है।" यह नाम कामदेव के गुणों को दर्शाता है, जो मनुष्य के हृदय में प्रेम और आकर्षण की भावनाओं को उत्पन्न करते हैं। "मनोज" कामदेव का एक प्रमुख पर्यायवाची है।

Information Booster:

- कामदेव को "मदन," "अनंग," और "रति पति" जैसे नामों से भी जाना जाता है।
- वह प्रेम और सौंदर्य के देवता माने जाते हैं।

Additional Knowledge:

- **सरोज:** सरोज का अर्थ "कमल" होता है। यह शब्द कामदेव का पर्यायवाची नहीं है, बल्कि इसे आमतौर पर जल में उगने वाले कमल के लिए प्रयोग किया जाता है।
- **वरुण:** वरुण जल और महासागरों के देवता हैं। उनका कामदेव से कोई संबंध नहीं है।

- **मनोज:** मनोज का अर्थ है "मन से उत्पन्न" और यह कामदेव का एक प्रमुख पर्यायवाची है, जो उनके प्रेम और आकर्षण की शक्ति को दर्शाता है।

S6. Ans.(d)

Sol. 'राग' का विलोम 'विराग' है। 'राग' का अर्थ होता है प्रेम, लगाव, या आसक्ति, जबकि 'विराग' का अर्थ होता है किसी चीज़ से विमुक्त होना या आसक्ति का अभाव। 'विराग' उस स्थिति को दर्शाता है, जब व्यक्ति संसारिक वस्तुओं या भावनाओं से मुक्त हो जाता है।

Information Booster:

- 'राग' का अर्थ है प्रेम, आसक्ति, या लगाव।
- 'विराग' का अर्थ होता है वैराग्य, अर्थात् संसारिक सुखों और मोह-माया से दूर होना।
- यह शब्द भारतीय दर्शन में विशेष रूप से प्रयुक्त होता है, जहाँ मोक्ष की प्राप्ति के लिए विराग आवश्यक माना गया है।
- 'राग' और 'विराग' का संबंध मनोवृत्ति और भावनाओं से है।
- 'राग' और 'विराग' दोनों ही शब्द भावनात्मक रूप से अत्यधिक शक्तिशाली हैं और आध्यात्मिक साहित्य में मिलते हैं।

Additional Information:

- **आहत:** इसका अर्थ होता है चोटिल या आघात किया हुआ।
- **उदार:** इसका अर्थ होता है दयालु या बड़े दिल का व्यक्ति।
- **गमन:** इसका अर्थ है जाना या प्रस्थान करना।

S7. Ans.(a)

Sol. अलि' का अर्थ 'भौरा' होता है, और इसका प्रयोग 'कोयल' एवं 'सखी' के संदर्भ में भी किया जाता है। यह शब्द हिंदी साहित्य में बहु-अर्थी शब्द के रूप में उपयोग होता है, जो कई संदर्भों में विभिन्न अर्थ देता है।

Information Booster:

- 'अलि' का प्रयोग सामान्यतः कविताओं में उपमा के रूप में भौरि या किसी प्रिय व्यक्ति के लिए किया जाता है।
- यह शब्द प्रेमभावना को व्यक्त करने के लिए भी प्रचलित है।
- भौरि का प्रतीक प्रेम, सुंदरता और संगीत से जुड़ा होता है।
- 'कोयल' का अर्थ मीठी आवाज और मधुरता से जुड़ा होता है।
- साहित्यिक रूप से 'सखी' का अर्थ प्रिय या मित्र के रूप में किया जाता है।

Additional Information:

- **अंत:** इसका अर्थ है समापन या किसी चीज़ का समाप्त होना।
- **अनंता:** इसका अर्थ होता है 'जिसका कोई अंत नहीं', जैसे अनंत काल या ईश्वर।
- **आकार:** इसका अर्थ होता है किसी वस्तु का रूप, आकृति या माप।

S8. Ans.(a)

Sol. 'खोपड़ी' शब्द का तत्सम रूप 'खर्पर' है। तत्सम शब्द वे शब्द होते हैं, जिन्हें संस्कृत से ज्यों का त्यों लिया गया होता है और उनका रूप समय के साथ नहीं बदला होता। 'खोपड़ी' का प्रचलित रूप अपभ्रंश है, जबकि इसका संस्कृत रूप 'खर्पर' होता है। 'खर्पर' का प्रयोग शास्त्रीय और साहित्यिक भाषा में अधिक होता है, जबकि 'खोपड़ी' शब्द का उपयोग सामान्य बोलचाल की भाषा में किया जाता है।

Information Booster:

- तत्सम शब्द संस्कृत से सीधे लिए गए होते हैं।
- 'खर्पर' का अर्थ खोपड़ी है, जो कि मानव या जानवरों के सिर की हड्डी है।

- खर्पर शब्द साहित्यिक और धार्मिक ग्रंथों में प्रयुक्त होता है।
- खोपड़ी शब्द का उपयोग आधुनिक हिंदी में किया जाता है।
- तत्सम शब्दों का मुख्य उद्देश्य भाषा की शुद्धता को बनाए रखना है।

Additional Information:

- **खर्पर** : यह संस्कृत से लिया गया तत्सम शब्द है, जिसका अर्थ 'खोपड़ी' होता है।
- **व्याघ्र** : यह भी एक तत्सम शब्द है, जिसका अर्थ 'बाघ' है।
- **लोक** : लोक का अर्थ 'दुनिया' या 'जनता' होता है। यह भी तत्सम शब्द है।
- **लवंग** : यह एक तत्सम शब्द है, जिसका अर्थ 'लौंग' होता है, जो एक मसाला है।

S9. Ans.(a)

Sol. कच्चा चिट्ठा खोलना मुहावरे का अर्थ है रहस्यों को उजागर करना करना, कोई रहस्य खोलना, पोल खोलना, सारे रहस्य उजागर करना, असलियत उजागर करना या प्रकट करना, गुप्त बातें उजागर करना।

वाक्य प्रयोग :-

- जब तुम्हारा कच्चा चिट्ठा सबके सामने खुलूंगा तब तुम्हे पता चलेगा की तुमने मेरे साथ झगडा कर कर क्या किया है ।
- भाई यह तो चाहता ही है की हम दोनो लडे और अपना ही कच्चा चिट्ठा दुनिया के सामने खोल दे ।
- समय के साथ साथ हर किसी का कच्चा चिट्ठा खुल जाता है ।
- रमेश ने तुम्हारा कच्चा चिट्ठा हमारे सामने खोल है अब तुम हमे बेवकूफ नही बना सकते हो ।

S10. Ans.(c)

Sol. 'कबहुँ निरामिष होय न कागा' का अर्थ है कि एक दुष्ट व्यक्ति अपनी दुष्टता कभी नहीं छोड़ता, जैसे कि कौआ कभी शाकाहारी नहीं हो सकता। इस लोकोक्ति का प्रयोग उस स्थिति में किया जाता है जब किसी दुष्ट व्यक्ति से अच्छाई की उम्मीद करना व्यर्थ हो।

Information Booster:

- इस लोकोक्ति का भाव यह है कि जैसे कौआ कभी मांसाहारी स्वभाव नहीं छोड़ सकता, उसी प्रकार दुष्ट व्यक्ति अपनी दुष्टता नहीं छोड़ता।
- इस लोकोक्ति का उपयोग उन स्थितियों में किया जाता है जहां किसी दुष्ट व्यक्ति से अच्छा व्यवहार की उम्मीद व्यर्थ हो।
- हिंदी लोकोक्तियाँ समाज के व्यवहार और दृष्टिकोण को स्पष्ट रूप से व्यक्त करती हैं।
- यह लोकोक्ति यह भी दर्शाती है कि किसी के स्वभाव में बदलाव लाना बहुत कठिन होता है।
- लोकोक्तियाँ जनसाधारण के अनुभवों पर आधारित होती हैं और उनका उपयोग ज्ञानवर्धक और व्यंग्यपूर्ण संदर्भों में होता है।

Additional Information:

- ऊपरी वेशभूषा से किसी के अवगुण नहीं छिप जाते: यह दूसरी स्थिति को व्यक्त करता है, लेकिन यह इस लोकोक्ति का सही अर्थ नहीं है।
- कोई अपने माल को खराब नहीं कहता : यह लोकोक्ति माल या संपत्ति के संदर्भ में नहीं है।
- बहुत कठिन परिश्रम का थोड़ा लाभ : यह भी इस लोकोक्ति से संबंधित नहीं है।

S11. Ans.(b)

Sol. गद्यांश के अनुसार प्राण को गहराई से बहना चाहिए। इसका अर्थ है कि सांस को गहराई से और पूरी क्षमता के साथ लेना चाहिए ताकि यह स्वास्थ्य और मानसिक शांति के लिए सहायक हो सके। छाती से शुरू करके सिर्फ छोटी सी यात्रा करना पर्याप्त नहीं है, बल्कि प्राण का बहाव गहराई से होना चाहिए ताकि व्यक्ति ऊर्जावान, शांत और धैर्यवान महसूस करे।

Information Booster:

- गहरी सांस लेने से शरीर को ऑक्सीजन की पर्याप्त मात्रा मिलती है।
- यह मन को शांत करने में सहायक होता है और तनाव को कम करता है।
- गहरी और धीमी श्वास ध्यान के अभ्यास में सहायक मानी जाती है।
- सांस लेने की यह प्रक्रिया शरीर में ऊर्जा का संचार बढ़ाती है।
- नियमित अभ्यास से शारीरिक और मानसिक संतुलन बेहतर होता है।

S12. Ans.(a)

Sol. गद्यांश के अनुसार, ऊर्जावान, शक्तिवान और शांत स्वभाव बनने के लिए आवश्यक है कि प्राण वायु का धीमा और गहराई से बहना हो। इसका अर्थ है कि सांस को धीरे-धीरे और पूरी गहराई से भरना चाहिए। यह श्वसन प्रक्रिया शरीर और मन को ऊर्जा प्रदान करती है, साथ ही मानसिक शांति और स्थिरता लाती है। जब प्राण वायु गहराई से और धीमी गति से बहती है, तो व्यक्ति स्वयं को शांत, संतुलित और शक्ति से भरा हुआ महसूस करता है।

Information Booster:

- श्वास की गहराई बढ़ाने से फेफड़ों में ऑक्सीजन का आदान-प्रदान अधिक होता है, जिससे शरीर ऊर्जावान बनता है।
- धीमी और गहरी श्वास मन को शांत करती है और तनाव को कम करती है।
- ध्यान और योग में गहरी श्वास को प्रमुखता दी जाती है ताकि मानसिक और शारीरिक शांति मिल सके।
- धीमी श्वास लेने से हृदय की गति भी नियंत्रित होती है, जिससे रक्तचाप कम रहता है।
- यह प्रक्रिया रचनात्मकता और धैर्य बढ़ाने में सहायक होती है।

S13. Ans.(a)

Sol. गद्यांश के अनुसार, जब प्राण वायु व्यवस्थित रूप से और गहराई से बहता है, तो मन को शांति मिलती है, धैर्य बढ़ता है, और व्यक्ति अधिक रचनात्मक और शांत स्वभाव का बनता है। साथ ही, यह प्राणायाम घबराहट और भय को कम करने में सहायक होता है। इसलिए, यदि प्राण वायु सही तरीके से बहता है, तो घबराहट में वृद्धि नहीं होगी।

Information Booster:

- व्यवस्थित और गहरी श्वास लेने से हृदय गति संतुलित होती है, जिससे घबराहट और तनाव कम होते हैं।
- यह ध्यान की अवस्था में प्रवेश करने में सहायक होता है, जिससे मन अधिक शांति और स्थिरता प्राप्त करता है।
- प्राणायाम मनोवैज्ञानिक स्वास्थ्य के लिए अत्यंत लाभकारी होता है, यह तनाव और चिंता को नियंत्रित करता है।
- जब श्वास को गहराई से लिया जाता है, तो शरीर में ऑक्सीजन का प्रवाह बढ़ता है, जिससे रचनात्मकता और कार्यक्षमता में सुधार होता है।
- यह अभ्यास व्यक्ति को मानसिक और शारीरिक रूप से स्वस्थ बनाए रखने में सहायक होता है।

Additional Knowledge:

- मन का तनाव दूर होना: प्राणायाम से मन का तनाव दूर होता है, क्योंकि यह मन को शांत करता है और संतुलन में लाता है।
- रचनात्मकता का विकास होना: जब व्यक्ति गहरी श्वास लेता है और प्राण को सही ढंग से संचालित करता है, तो उसकी रचनात्मक क्षमता में वृद्धि होती है।
- भय से मुक्ति मिलना: सही श्वास और प्राणायाम से भय और घबराहट जैसी भावनाओं से मुक्ति पाई जा सकती है।

S14. Ans.(c)

Sol. गद्यांश के अनुसार, प्राण वायु का गहराई और धीमी गति से बहना ध्यान लगाने में सहायक होता है। जब हम श्वास को गहराई और धीमी गति से लेते हैं, तो यह मन को शांत करता है और ध्यान की गहराइयों में ले जाने में मदद करता है। प्राणायाम से मन में शांति और स्थिरता आती है, जो ध्यान करने की आवश्यक स्थिति होती है।

Information Booster:

- गहरी और धीमी श्वास से मानसिक एकाग्रता बढ़ती है, जो ध्यान के लिए महत्वपूर्ण है।
- यह प्रक्रिया ध्यान की अवस्था में प्रवेश को सरल बनाती है, क्योंकि मन अधिक शांत और स्थिर हो जाता है।
- प्राणायाम से शरीर और मन के बीच का संतुलन बना रहता है, जिससे ध्यान की प्रक्रिया सहज हो जाती है।
- श्वास की गति को नियंत्रित करने से आंतरिक ऊर्जा का प्रवाह बढ़ता है, जिससे ध्यान की गहराई बढ़ती है।
- यह न केवल शारीरिक स्वास्थ्य में सुधार करता है, बल्कि मानसिक शांति और मानसिक स्वास्थ्य के लिए भी लाभकारी होता है।

Additional Knowledge:

- इच्छाएँ पूर्ण करने: प्राण वायु का गहराई और धीमी गति से बहना इच्छाओं की पूर्ति में प्रत्यक्ष रूप से सहायक नहीं होता है, यह ध्यान और शांति में सहायक होता है।
- व्यापार बढ़ाने: यह विकल्प संदर्भ से बाहर है, क्योंकि प्राणायाम का व्यापार से कोई सीधा संबंध नहीं है।
- अभ्यासमुक्त होने: प्राणायाम नियमित अभ्यास की मांग करता है।

S15. Ans.(a)

Sol. प्राण वायु मानव जीवन में सबसे महत्वपूर्ण है क्योंकि इसके बिना जीवन का कोई अस्तित्व नहीं है। गद्यांश में भी प्राण वायु को प्रमुख रूप से उल्लेख किया गया है, जो न केवल शारीरिक स्वास्थ्य बल्कि मानसिक और आध्यात्मिक उन्नति के लिए भी आवश्यक है। बिना प्राण वायु के शरीर की कोई क्रिया संभव नहीं है, और यह जीवन के लिए मूलभूत तत्व है।

Information Booster:

- प्राण वायु का शारीरिक स्वास्थ्य के साथ-साथ मानसिक और भावनात्मक संतुलन पर गहरा प्रभाव पड़ता है।
- प्राण वायु शरीर की कोशिकाओं को ऑक्सीजन प्रदान करती है, जो जीवन के लिए आवश्यक है।
- योग और ध्यान की क्रियाएँ भी प्राण वायु पर आधारित होती हैं, जो इसे और महत्वपूर्ण बनाती हैं।
- प्राण वायु का नियमित अभ्यास तनाव, घबराहट, और मानसिक असंतुलन को कम करता है।
- यह न केवल जीवन को शक्ति देता है, बल्कि आंतरिक शांति और ऊर्जा का प्रमुख स्रोत भी है।

Additional Knowledge:

- अभ्यास: अभ्यास जीवन में महत्वपूर्ण है, लेकिन यह प्राण वायु जितना अनिवार्य नहीं है। अभ्यास के लिए भी प्राण वायु आवश्यक है।
- ध्यान: ध्यान मानसिक शांति और आध्यात्मिक विकास के लिए आवश्यक है, लेकिन यह भी प्राण वायु पर आधारित होता है।
- योग: योग शरीर और मन को स्वस्थ रखने के लिए महत्वपूर्ण है, लेकिन योग भी प्राण वायु के साथ अधिक प्रभावी होता है।

S16. Ans.(a)

Sol. विशेषण वह शब्द होता है जो किसी संज्ञा या सर्वनाम की विशेषता या गुण को व्यक्त करता है। दिए गए विकल्पों में शांत विशेषण है, क्योंकि यह किसी व्यक्ति या वस्तु की स्थिति या गुण को व्यक्त करता है, जैसे "शांत व्यक्ति" या "शांत वातावरण"। यह विशेषण का उदाहरण है, जो किसी संज्ञा या सर्वनाम को और स्पष्ट बनाता है। घबराहट एक भाववाचक संज्ञा है, जो किसी व्यक्ति की भावनात्मक अवस्था को दर्शाता है। मन एक संज्ञा है, जो व्यक्ति की मानसिक स्थिति या उसकी सोचने की क्षमता को दर्शाता है। धैर्य भी एक भाववाचक संज्ञा है, जो किसी व्यक्ति के धैर्यशील होने की अवस्था को दर्शाता है।

Information Booster:

- विशेषण शब्द संज्ञा या सर्वनाम की विशेषता को व्यक्त करता है।
- विशेषण शब्द प्रायः संज्ञा के पहले या बाद में आता है।

- विशेषण से संज्ञा या सर्वनाम की स्थिति, गुण, या मात्रा का ज्ञान होता है।
- विशेषण शब्द संज्ञा को और अधिक स्पष्ट व विशेष बनाते हैं।
- विशेषण के विभिन्न प्रकार होते हैं, जैसे गुणवाचक विशेषण, परिमाणवाचक विशेषण, संकेतवाचक विशेषण आदि।

Additional Knowledge:

- शांत: यह विशेषण है, जो किसी व्यक्ति या वस्तु की अवस्था को दर्शाता है। जैसे "शांत नदी" या "शांत मनुष्य"।
- घबराहट: यह भाववाचक संज्ञा है, जो किसी व्यक्ति की मानसिक स्थिति को दर्शाता है, जैसे "उसकी घबराहट बढ़ गई।"
- मन: यह संज्ञा है, जो मानव की मानसिक स्थिति या सोचने की शक्ति को व्यक्त करता है।
- धैर्य: यह भाववाचक संज्ञा है, जो किसी व्यक्ति के स्थिर और सहनशील होने की स्थिति को दर्शाता है, जैसे "धैर्य का पालन करना।"

S17. Ans.(c)

Sol. "सुनिश्चित" शब्द का निर्माण "सु" उपसर्ग और "निश्चित" मूल शब्द से हुआ है। "सु" एक संस्कृत उपसर्ग है, जिसका अर्थ है "अच्छा" या "सही", और "निश्चित" का अर्थ है "पक्का" या "निर्णीत"। इसलिए "सुनिश्चित" का अर्थ हुआ "अच्छे से सुनिश्चित किया हुआ"।

Information Booster:

- उपसर्ग शब्द के आरंभ में जुड़ने वाला वह अंश होता है जो मूल शब्द का अर्थ परिवर्तित या विस्तारित करता है।
- मूल शब्द वह शब्द होता है जो उपसर्ग या प्रत्यय जोड़ने से पहले का रूप होता है।
- "सु" उपसर्ग प्रायः सकारात्मक अर्थ देता है, जैसे "सुगंध", "सुरक्षित", आदि।
- "निश्चित" का अर्थ है "पक्का" या "निर्णीत", और उपसर्ग "सु" जोड़ने से यह शब्द और अधिक पक्का या सुनिश्चित हो जाता है।
- उपसर्गों का सही प्रयोग भाषा को अधिक समृद्ध और अभिव्यक्तिपूर्ण बनाता है।

S18. Ans.(d)

Sol. इस गद्यांश में लेखक ने महात्मा गांधी के विषय में दिए गए विकल्पों में से कुछ नहीं कहा है।

S19. Ans.(c)

Sol. 'तटस्थ चिंतन से अभिप्राय है निष्पक्ष होकर सोच-विचार करना।

S20. Ans.(d)

Sol. गद्यांश का संबंध कर्मवाद से है।

S21. Ans.(a)

Sol. गद्यांश में लेखक ने मुख्य रूप से कुछ महापुरुषों का चरित्र चित्रण किया है।

S22. Ans.(c)

Sol. गद्यांश में लेखक ने यूरोप के कुछ महापुरुषों के विषय में यह कहा है कि उन्होंने उपाय तो बताए पर उनका कार्यान्वयन दूसरों पर छोड़ दिया।

S23. Ans.(a)

Sol. 'अच्' और 'अन्त' का संधि होने पर 'अजन्त' शब्द बनता है। अच् (स्वर) और अन्त (अंतिम) का संधि-नियम स्वर संधि पर आधारित होता है, जिसमें दो शब्द मिलकर एक नया शब्द बनाते हैं। अच् का अर्थ है स्वर, और अन्त का अर्थ है अंत। जब दोनों का संधि की जाती है, तो इसका संधि रूप 'अजन्त' होता है, जिसका अर्थ होता है स्वरांत।

Information Booster:

- संधि भाषा के शब्द निर्माण का महत्वपूर्ण हिस्सा है, जहां दो शब्द या ध्वनियाँ मिलकर एक नया शब्द बनाते हैं।
- 'अजन्त' का अर्थ है वह शब्द जो स्वर (अच्) पर समाप्त होता है।
- 'अच्' का अर्थ है स्वर और 'अन्त' का अर्थ है अंत।
- संधि-विच्छेद को सही समझने से शब्दों के निर्माण और उनके अर्थों को स्पष्ट रूप से समझा जा सकता है।
- संस्कृत और हिंदी में संधि का महत्व व्याकरणिक दृष्टिकोण से अत्यधिक है, क्योंकि यह भाषा को सुसंगठित करता है।

Additional Information:

- अजन्त : 'अच्' और 'अन्त' का संधि रूप है, जो स्वरांत शब्दों के लिए प्रयुक्त होता है।
- अचंत : यह विकल्प गलत है क्योंकि 'अच्' और 'अन्त' का संधि रूप 'अचंत' नहीं है।
- अंत : यह विकल्प केवल 'अन्त' शब्द का संक्षिप्त रूप है, जो इस संधि के लिए सही नहीं है।
- अचिन्त्य : यह एक अलग शब्द है, जिसका संधि से कोई संबंध नहीं है। इसका अर्थ होता है "जिसके बारे में सोचा न जा सके"।

S24. Ans.(d)

Sol. 'अभी-अभी' अव्ययीभावसमास का उदाहरण है। अव्ययीभाव समास में पहला पद अव्यय होता है (अर्थात वह पद जिसका रूप अपरिवर्तनीय होता है) और दूसरा पद संज्ञा, विशेषण या क्रिया होता है। अव्ययीभाव समास के अंतर्गत जब कोई अव्यय शब्द किसी अन्य शब्द के साथ जुड़कर नया अर्थ व्यक्त करता है, तब उसे अव्ययीभाव समास कहते हैं। उदाहरण के रूप में 'अभी-अभी' में "अभी" अव्यय है, और यह समय के संदर्भ में आता है।

'अभी-अभी' का अर्थ होता है "अभी के थोड़ी ही देर पहले"। इस समास में पहला शब्द (अव्यय) अपने रूप में परिवर्तन नहीं करता है।

Information Booster:

- अव्ययीभाव समास में पहला पद हमेशा अव्यय होता है, जिसका रूप स्थिर रहता है।
- अव्ययीभाव समास का मुख्य उद्देश्य वाक्य को संक्षिप्त और प्रभावशाली बनाना होता है।
- अव्ययीभाव समास में पहला पद अव्यय के रूप में रहता है और दूसरा पद उसके साथ जुड़कर नया अर्थ प्रस्तुत करता है।
- हिंदी व्याकरण में समास वाक्य को छोटा और सुगम बनाने का एक महत्वपूर्ण तत्व है।

Additional Knowledge:

- द्वंद्व समास: इसमें दोनों पद समान महत्व रखते हैं और वे एक दूसरे के साथ द्वंद्व (विरोधी या विपरीत अर्थ) बनाते हैं।
उदाहरण: राम-लक्ष्मण।
- तत्पुरुष समास : इसमें पहले पद का अर्थ दूसरे पद पर निर्भर करता है। उदाहरण: राजपुत्र (राजा का पुत्र)।
- कर्मधारय समास : इसमें पहला पद विशेषण और दूसरा पद संज्ञा होता है, और दोनों का अर्थ एक साथ मिलकर विशेषण-संज्ञा का रूप लेते हैं। उदाहरण: नीलकमल (नीला कमल)।
- अव्ययीभव समास : इसमें पहला शब्द अव्यय होता है और वह दूसरे पद के साथ मिलकर विशेष अर्थ प्रदान करता है।
उदाहरण: यथाशक्ति (शक्ति के अनुसार)।

S25. Ans.(c)

Sol. "मिताहारी" का अर्थ है वह व्यक्ति जो नपा-तुला, संतुलित और कम भोजन करता हो। यह शब्द दो भागों से बना है: "मित" जिसका अर्थ है कम या नपा-तुला, और "आहार" जिसका अर्थ है भोजन। इस प्रकार, मिताहारी वह व्यक्ति होता है जो आवश्यकता से अधिक भोजन नहीं करता, बल्कि संयम से खाता है।

- मिताहारी का मतलब है भोजन में संयम रखने वाला व्यक्ति, जो नपा-तुला आहार ग्रहण करता हो।

S26. Ans.(c)

Sol. उज्ज्वल अशुद्ध शब्द है। सही शब्द उज्ज्वल होता है।

- उज्ज्वल: यह अशुद्ध रूप है, क्योंकि इसमें "ज्वल" के स्थान पर "जवल" का उपयोग हुआ है, जो गलत है।
- उज्ज्वल: इसका अर्थ है चमकदार या तेजस्वी।
 - उपार्जित का अर्थ है अर्जित किया हुआ।
 - निश्चेष्ट का अर्थ है निष्क्रिय या सुस्त।

इसलिए विकल्प (c) वर्तनी की दृष्टि से अशुद्ध है।

Information Booster

- सही वर्तनी भाषा की स्पष्टता और प्रभाव को बढ़ाती है।
- उज्ज्वल जैसे शब्द हिंदी साहित्य और कविताओं में व्यापक रूप से उपयोग होते हैं।
- उपार्जित शब्द ज्यादातर आध्यात्मिक और दार्शनिक संदर्भों में उपयोग होता है।
- निश्चेष्ट एक नकारात्मक भाव का द्योतक है, जो सुस्ती या आलस्य को व्यक्त करता है।

Additional Knowledge

- उपार्जित: यह क्रिया आधारित शब्द है, जो "अर्जित" से बना है। इसका उपयोग किसी वस्तु, ज्ञान, या अनुभव को प्राप्त करने के संदर्भ में होता है।
 - उदाहरण: "कड़ी मेहनत से उपार्जित धन सम्मान दिलाता है।"
- निश्चेष्ट: यह शब्द "निष्क्रिय" और "शेष" से संबंधित है, जिसका अर्थ है ऐसा व्यक्ति या वस्तु जो कोई कार्य न कर रहा हो।
 - उदाहरण: "निश्चेष्ट जीवन सफलता में बाधक है।"
- उज्ज्वल: यह "ज्वल" धातु से बना है, जिसका अर्थ है प्रकाशमान या तेजस्वी।
 - उदाहरण: "उसका भविष्य उज्ज्वल है।"

S27. Ans.(b)

Sol. राजस्थानी भाषा का उद्भव शौरसेनी अपभ्रंश के क्षेत्रीय रूप से हुआ है।

शौरसेनी-

- शौरसेनी नामक प्राकृत मध्यकाल में उत्तरी भारत की एक प्रमुख भाषा थी।
- यह नाटकों में प्रयुक्त होती थी (वस्तुतः संस्कृत नाटकों में, विशिष्ट प्रसंगों में)।
- बाद में इससे हिंदी-भाषा-समूह व पंजाबी विकसित हुए।
- दिगंबर जैन परंपरा के सभी जैनाचार्यों ने अपने महाकाव्य शौरसेनी में ही लिखे जो उनके आदृत महाकाव्य हैं।
- इससे राजस्थानी हिन्दी, पहाड़ी हिन्दी और पश्चिमी हिन्दी का विकास हुआ है।

अर्धमागधी-

- मध्य भारतीय आर्य परिवार की भाषा अर्धमागधी संस्कृत और आधुनिक भारतीय भाषाओं के बीच की एक महत्वपूर्ण कड़ी है।
- यह प्राचीन काल में मगध की साहित्यिक एवं बोलचाल की भाषा थी।
- हेमचंद्र आचार्य ने अर्धमागधी को 'आर्ष प्राकृत' कहा है।
- अर्धमागधी शब्द का कई तरह से अर्थ किया जाता है-
- जो भाषा मगध के आधे भाग में बोली जाती हो।
- जिसमें मागधी भाषा के कुछ लक्षण पाए जाते हों, जैसे पुलिंग में प्रथमा के एकवचन में एकारांत रूप का होना (जैसे धम्म)।
- इस भाषा में विपुल जैन एवं लौकिक साहित्य की रचना की गई।

ब्राह्मण-

- मार्कण्डेय के अनुसार यह अपभ्रंश का एक भेद है।

S28. Ans.(c)

Sol. 'प्रेमघन की छाया-स्मृति' के लेखक आचार्य रामचंद्र शुक्ल हैं।

महत्वपूर्ण बिंदु:

1. **रचना का स्वरूप:** 'प्रेमघन की छाया-स्मृति' एक संस्मरणात्मक निबंध है, जिसमें आचार्य शुक्ल ने अपने बचपन के साहित्यिक परिवेश और उपाध्याय बद्रीनारायण चौधरी 'प्रेमघन' के साथ अपने अनुभवों का वर्णन किया है।
2. **विषय-वस्तु:** इस निबंध में लेखक ने अपने पिताजी के साहित्यिक रुझान, भारतेंदु हरिश्चंद्र के नाटकों के प्रति आकर्षण, और मिर्जापुर में 'प्रेमघन' के साथ हुई पहली मुलाकात का जीवंत चित्रण किया है।
3. **साहित्यिक महत्व:** यह निबंध हिंदी साहित्य में आचार्य शुक्ल के आत्मकथात्मक लेखन का महत्वपूर्ण उदाहरण है, जो उनके साहित्यिक विकास और समकालीन साहित्यकारों के प्रति उनके दृष्टिकोण को दर्शाता है।

अतिरिक्त जानकारी:

- **आचार्य रामचंद्र शुक्ल का परिचय:** आचार्य शुक्ल (1884-1941) हिंदी के प्रमुख आलोचक, इतिहासकार और निबंधकार थे। उन्होंने 'हिंदी साहित्य का इतिहास', 'चिंतामणि', 'रस मीमांसा' जैसी महत्वपूर्ण कृतियों की रचना की। उनकी गद्य शैली विवेचनात्मक, प्रांजल और प्रभावशाली है।
- **उपाध्याय बद्रीनारायण चौधरी 'प्रेमघन':** वे भारतेंदु मंडल के प्रमुख कवि और साहित्यकार थे, जिनका हिंदी साहित्य के विकास में महत्वपूर्ण योगदान रहा है। उनकी रचनाएँ तत्कालीन समाज और संस्कृति का प्रतिबिंब प्रस्तुत करती हैं।
- **निबंध की विशेषता:** 'प्रेमघन की छाया-स्मृति' में आचार्य शुक्ल ने अपने बाल्यकाल के अनुभवों के माध्यम से हिंदी साहित्य के प्रति अपने रुझान और 'प्रेमघन' के व्यक्तित्व का सजीव चित्रण किया है, जो पाठकों को उस युग की साहित्यिक गतिविधियों से परिचित कराता है।

S29. Ans.(c)

Sol. 'कादम्बरी' हजारी प्रसाद द्विवेदी जी की रचना नहीं है। यह संस्कृत साहित्य का एक प्रसिद्ध ग्रंथ है, जिसे बाणभट्ट ने लिखा था। बाणभट्ट गुप्तकालीन महाकवि थे, जिन्होंने 'कादम्बरी' और 'हर्षचरित' जैसी महान कृतियों का सृजन किया। हजारी प्रसाद द्विवेदी एक प्रमुख हिंदी साहित्यकार थे, जिनकी प्रमुख रचनाएँ 'बाणभट्ट की आरम्भ-कथा', 'पुनर्नवा', और 'कल्पलता' हैं। उन्होंने हिंदी साहित्य के इतिहास में महत्वपूर्ण योगदान दिया और उनकी रचनाएँ समाज, संस्कृति और भाषा के विभिन्न पहलुओं को अभिव्यक्त करती हैं।

Information Booster:

- **कादम्बरी का परिचय:** 'कादम्बरी' बाणभट्ट की कृति है, जो संस्कृत साहित्य में एक महत्वपूर्ण स्थान रखती है। इसे प्रेमकथा के रूप में जाना जाता है।
- **हजारी प्रसाद द्विवेदी की रचनाएँ:** हजारी प्रसाद द्विवेदी की प्रमुख रचनाओं में 'बाणभट्ट की आरम्भ-कथा', 'पुनर्नवा', और 'कल्पलता' शामिल हैं।
- **हजारी प्रसाद द्विवेदी का योगदान:** द्विवेदी जी ने हिंदी साहित्य में ऐतिहासिक, सांस्कृतिक और सामाजिक दृष्टिकोण से अमूल्य योगदान दिया है।
- **संस्कृत और हिंदी साहित्य का अंतर:** 'कादम्बरी' संस्कृत साहित्य की रचना है, जबकि हजारी प्रसाद द्विवेदी की रचनाएँ हिंदी साहित्य के अंतर्गत आती हैं।
- **भाषा और साहित्य का विकास:** हजारी प्रसाद द्विवेदी ने हिंदी साहित्य में भाषा और विचारधारा का विकास किया, जिससे हिंदी साहित्यिक धारा समृद्ध हुई।

Additional Information:

- **वाणभट्ट की आरम्भ-कथा:** यह हजारी प्रसाद द्विवेदी की रचना है, जिसमें वाणभट्ट के जीवन और साहित्यिक योगदान का वर्णन किया गया है।
- **पुनर्नवा :** यह भी हजारी प्रसाद द्विवेदी की एक प्रसिद्ध कृति है, जिसमें उन्होंने पुनरुत्थान और नवीनता के विचार को साहित्य में व्यक्त किया है।
- **कल्पलता:** 'कल्पलता' भी हजारी प्रसाद द्विवेदी द्वारा लिखित एक रचना है, जिसमें उनके सामाजिक और सांस्कृतिक दृष्टिकोण को दर्शाया गया है।

Key Points:

- 'कादम्बरी' वाणभट्ट द्वारा लिखी गई संस्कृत साहित्य की प्रसिद्ध रचना है।
- हजारी प्रसाद द्विवेदी ने 'वाणभट्ट की आरम्भ-कथा', 'पुनर्नवा', और 'कल्पलता' जैसी रचनाएँ लिखीं, जो हिंदी साहित्य की धरोहर हैं।

S30. Ans.(d)

Sol. इन पंक्तियों में श्लेष अलंकार है। श्लेष अलंकार - जब किसी शब्द का प्रयोग एक बार ही किया जाता है पर उसके एक से अधिक अर्थ निकलते हैं तब श्लेष अलंकार होता है। उदाहरण -

रहिमन पानी राखिये, बिन पानी सब सूना।

पानी गये न ऊबरै, मोती मानुष चून।।

यहाँ पानी का प्रयोग तीन बार किया गया है, किन्तु दूसरी पंक्ति में प्रयुक्त पानी शब्द के तीन अर्थ हैं - मोती के सन्दर्भ में पानी का अर्थ चमक या कान्ति मनुष्य के सन्दर्भ में पानी का अर्थ इज्जत (सम्मान) चूने के सन्दर्भ में पानी का अर्थ साधारण पानी(जल) है।